“राजगीर”

Mandip kumar Chaurasiya

Assistant Professor(Guest)

Dept. of A.I.H. & Archaeology

Patna university, patna-800005

B.A. – 2nd Year

Paper – III (Indian Art, Architecture and Archaeology)

नालंदा जिला मुख्यालय, बिहारशरीफ से 12 किलोमीटर की दूरी पर राजगीर स्थित है| पांच पहाड़ियों से घिरे इस स्थान को मगध की प्राचीन राजधानी होने का गौरव प्राप्त है| रामायण, महाभारत, पुराणों तथा बौद्ध एवं जैन साहित्य में इस नगर की चर्चा वसुमती, वृहद्रथपुर, कुशाग्रपुर, मगधपुर, गिरिव्रिज तथा बिम्बिसारपुर आदि नामो से की गई है|

भगवान बुद्ध के समय राजगृह हर्यक वंश शासक बिम्बिसार की राजधानी थी| प्रसिद्ध चीनी यात्रियों फाहयान एवं ह्वेनसांग ने प्राचीन राजगृह का वर्णन किया है| ह्वेनसांग ने इसका उल्लेख राजाओं का घर अर्थात राजगृह के रूप में किया है| दोनों यात्रियों ने मुख्यतः राजगृह के बौद्ध स्मारकों का वर्णन किया है| इन स्मारकों में बुद्ध के अस्थि

अवशेष पर निर्मित स्तूप, बिम्बिसार का महल, जीवक का आम्रवन, गृद्धकूट पर्वत (जहाँ बुद्ध ठहरा करते थे), वेणुवन, पिप्पल गुहा, सप्तपर्णी गुहा आदि प्रमुख हैं| ह्वेनसांग ने राजगृह के गरम झरनों का एवं उसके आसपास स्थित स्तूपों एवं विहारों का भी उल्लेख किया है|

बौद्ध साहित्य के अतरिक्त जैन साहित्य में भी राजगृह के वैभव का बखान हैं| उनके अनुसार भी यहाँ भव्य भवन स्थित थे| तीर्थकर महावीर ने कई वर्षा वास राजगृह में किए थे| बीसवें तीर्थकर मुनि सुव्रत की जन्म स्थली भी राजगृह को माना गया है|

राजगीर में पुरातात्विक महत्व के अनेक अवशेष एवं स्मारक आज भी दृष्ट्व्य हैं| इनमे से कुछ स्मारकों का परिचय इस प्रकार है|

<u>प्राचीन रक्षा प्राचीर</u> : - राजगीर पांच पहाड़ियों वैभारगिरी, विपुलाचल, सोनगिरी, उदयगिरी, एवं रत्नागिरी से घिरा है| इन पांचों पहाड़ियों के ऊपर एक रक्षा प्राचीर बनाई गई है, जिसकी कुल लम्बाई लगभग 48 किलोमीटर है| इस दिवार को साइकलोपियनवाल कहा जाता है| पहाड़ियों के ऊपर बनी ऐसी रक्षा प्राचीर का सम्पूर्ण भारत में कोई अन्य उदहारण नहीं है| प्राचीर बड़े-बड़े अनगढ़े पाषाण खण्डों को जोड़कर बनाई गई है, किन्तु इनको जोड़ने में किसी गारे का उपयोग नहीं किया गया है| दिवार लगभग 3.5 मीटर चौड़ी तथा 6.5 मीटर ऊँची है| इसे मजबूती प्रदान करने के लिए जगह-जगह चौकोर चबूतरें बनाये गए है| पहाड़ियों को

जोड़ती इस दीवार के फलस्वरूप राजगृह में प्रवेश के लिए मात्र दो प्रवेश द्वार है, एक उत्तर की ओर एवं दूसरा दक्षिण में वाणगंगा के निकट|

राजगृह का इतिहास अत्यंत प्राचीन है| पौराणिक गाथाओं के अनुसार यह जरासंघ एवं उसके पूर्वर्ती मगध शासकों की राजधानी थी| इस अद्भुत दीवार का निर्माण भी शासकों की राजनैतिक आवश्यकता की पूर्ति हेतू हुआ होगा|

जरासंघ का बैठका : - राजगीर के गर्म झरनों के निकट पत्थरों से बना चौकोर चबूतरा है| इसकी अधिकतम उचाई 8.30 मीटर है| इसके निर्माण में भी साइकलोंपियन वाल की तरह ही अनगढ़े पत्थरों का उपयोग हुआ है| इसे जरासंघ के बैठका के नाम से जाना जाता है| पौराणिक कथाओं एवं महाभारत के अनुसार राजगीर मगध सम्राट जरासंघ की राजधानी थी जिसका वध कृष्ण ने भीम के हाथों करवाया था|

पिप्पल गुहा: - जरासंघ की बैठका के निकट एक गुफा है जिसे पिप्पल गुहा के नाम से जाना जाता है| फाह्यान और ह्वेनसांग दोनों ने इसका उल्लेख किया है| फाह्यान के अनुसार अपने राजगीर प्रवास के दौरान बुद्ध दोपहर में प्रायः यहाँ ध्यान लगाया करते थे| ह्वेनसांग ने इस गुफा में बौद्ध भिक्षुओं को रहते देखा था| जनरल कनिंघम इस गुफा को जरासंघ द्वारा निर्मित मानते है|

गृद्धकूट: - बौद्ध साहित्य के अनुसार भगवान बुद्ध राजगृह में अपना वर्षावास गृद्धकूट पर्वत की चोटी पर करते थे| ह्वेनसांग ने इस स्थल की यात्रा की थी| उसके अनुसार मगध राज बिम्बिसार ने भगवान बुद्ध का दर्शन इसी स्थल पर जाकर किया था| पहाड़ी के पश्चिमी छोर पर चीनी यात्री ने एक ईटों से बना विहार भी देखा था| जिसके पूर्वी द्वार पर बुद्ध की एक विशाल प्रतिमा स्थापित थी| चीनी यात्री ने बुद्ध के राजगीर प्रवास से जुडी अनेक घटनाओं का संबंध गृद्धकूट से किया है|

बिम्बिसार की जेल: - गृद्धकूट पर्वत के कुछ दूरी पर सड़क के किनारे एक आयताकार दुर्ग के अवशेष मिले हैं| इसकी दीवाल की मोटाई लगभग 2.55 मीटर हैं| इसके अंदर छोटे-छोटे कक्ष बने थे| एक कक्ष से लोहे की एक बेडी मिली है, जिसके आधार पर इसकी पहचान उस कारागार के रूप में की गई है, जिसमे आजातशत्रु ने अपने पिता बिम्बिसार को बंदी बनाकर रखा था| बौद्ध साहित्य में उल्लेख है कि बिम्बिसार कारगर से बुद्ध को गिद्धकूट पर्वत पर विचरण करते हुए देखा करता था|

मणियार मठ: - राजगृह के प्राचीनतम स्थापत्य अवशेषों में मणियार मठ का विशिष्ठ स्थान है| यह स्थल राजगीर से वाणगंगा की ओर जाने वाली सड़क के किनारे स्थित है| इस स्थल के महत्व को सर्वप्रथम जनरल कनिंघम ने समझा था| यहाँ उत्खनन से महत्वपूर्ण अवशेष

सामने आए, जिसमे सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि एक बेलनाकार मीनार है|

इसके आलावे भी बहुत से स्थल है जिनमे सप्तपर्णी गुहा, अजातशत्रु स्तूप, जीवक विहार, स्वर्ण भंडार गुफा, वेणुवन तथा रणभूमि प्रमुख हैं|